B - III
1 - 25
MIH

कांग्रेस के नरमदल (1885 - 1905)

तात्कालिक उद्देश्य :-

- जाति, धर्म और क्षेत्र की सीमाओं को तोड़ते हुए राष्ट्रीय एकता को प्रोत्साहन।
- राजनीतिक संगठनों एवं नेताओं के बीच मित्रवत संबंधों की स्थापना।
- जनता को जागरूक एवं प्रशिक्षित करना।
- राष्ट्रीय माँगों का निरूपण।

दीर्घकालिक लक्ष्य :-

- संवैधानिक मार्ग से स्वशासन के स्तर को प्राप्त करना।

प्रमुख माँग : कांग्रेस के द्वारा सरकार से

राजनीतिक माँग :-

- सिविल सेवा परीक्षा का आयोजन भारत में किया जाए।
- उच्च पदों का भारतीय करण किया जाए।
- विधायी परिषद में सदस्यों की संख्या बढ़ायी जाए,

भारतीयों की भी संख्या बढ़ायी जाए।

- विधायी परिषद के अधिकारों में वृद्धि की जाए।
- प्रेस की स्वतंत्रता की माँग।
- कांग्रेस के मंच से 1905 एवं 1906 में क्रमशः स्वशासन एवं स्वराज की माँग की गई।

<u>नोट</u> :- * 1905 में कांग्रेस का बनारस में अधिवेशन।

- अध्यक्ष- गोपाल कृष्ण गोखले।
- इसी अधिवेशन में पहली बार कांग्रेस के मंच से स्वशासन की माँग की गयी।

* 1906 में कांग्रेस का कलकत्ता अधिवेशन।

- अध्यक्ष- दादा भाई नौरोजी।
- इस अधिवेशन में भी स्वशासन या स्वराज की माँग की गई।

<u>नोट</u> :- यहाँ स्वशासन का अर्थ शासन में भारतीयों की अधिक से अधिक भागीदारी एवं व्यापक स्वायत्तता से था।

आर्थिक माँग :-

- भू-राजस्व में कटौती की जाए।
- नमक कर में कटौती की जाए।

- सिंचाई सुविधाओं का विस्तार किया जाए।
- कृषि बैंक की स्थापना की जाए।
- आधुनिक उद्योगों की स्थापना की जाए, भारत से धन के दोहन को रोका जाए।
- भारतीय खर्च पर विदेशों में सैन्य अभियान को रोका जाए।

अन्य मांग :-

- भारत में शिक्षा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार किया जाए।
- भारत से बाहर ब्रिटिश उपनिवेशों में काम करने वाले भारतीयों की दशा में सुधार की जाए।
- भारत में चाय, काफी के बागानों में काम करने वाले श्रमिकों की दशा में सुधार की जाए।

कार्यशैली :-

- प्रतिवर्ष आखिरी महीने में तीन दिनों की बैठक बुलाई जाती थी।
- बैठक की सूचना अखबारों के माध्यम से दी जाती थी।
- बैठक में ही यह निर्धारित हो जाता था कि अगली बैठक कहाँ होगी और बैठक जिस प्रांत में होती थी, अध्यक्ष उस प्रांत के नहीं होते थे।

- बैठक में विभिन्न मुद्दों पर प्रस्ताव पारित किए जाते थे। (सामाजिक, धार्मिक मुद्दों पर नहीं)
इन प्रस्तावों के समर्थन में लेख लिखे जाते थे क्षेत्रीय संस्थाओं में इसकी चर्चा होती थी तथा सरकार से भी लागू करने के लिए आग्रह किया जाता था।
- कांग्रेस ने ब्रिटिश सरकार एवं ब्रिटिश समाज तक अपनी बात पहुंचाने के लिए -
⇓
ब्रिटेन मे 1889 मे ब्रिटिश इण्डिया समिति का गठन किया और 1890 में इण्डिया नामक अखबार निकालना प्रारम्भ किया।

Note :- 1892 में 'हाउस ऑफ कॉमन्स' के लिए निर्वाचित होने वाले प्रथम भारतीय थे - दादाभाई नौरोजी।

सामाजिक आधार :-

- नरम दलीय चरण में कांग्रेस की गतिविधियों का संचालन मुख्यतः मध्यवर्ग द्वारा किया।
- इसमें अधिकांशतः शहरी पृष्ठभूमि के शिक्षित भारतीय थे। व्यवसायिक दृष्टिकोण से देखे तो इसमें वकीलों की संख्या सर्वाधिक थी इसके अतिरिक्त पत्रकार, शिक्षक इत्यादि की महत्वपूर्ण भूमिका थी

- कांग्रेस की प्रार्थना एवं प्रस्ताव की कार्यशैली तथा कांग्रेस की राजनीतिक मांगो में भी मध्यवर्गीय झुकाव को स्पष्ट रूप से देख सकते हैं।
- वास्तव में किसी भी राष्ट्र में आधुनिक राजनीति की ओर संक्रमण में मध्यवर्ग की प्रभावी भूमिका रही है भारत भी इसका अपवाद नहीं है।
- मध्यवर्गीय झुकाव के बावजूद आम लोगों से संबंधित राष्ट्रीय मुद्दो को महत्व दिया गया साथ ही प्रारम्भिक चरण में आम लोगों एवं युवा वर्ग से नरमदलीय नेताओं ने इसलिए भी दूरी बनाए रखी क्योंकि उन्हे ऐसा प्रतीत होता था कि अभी आवश्यकता है लोगों को जागरूक करने की और एक राष्ट्रीय संस्था के निर्माण की यदि प्रारम्भिक चरण में आम लोगों की भूमिका यदि बढ़ती है तो सरकार आन्दोलन का दमन कर सकती है।

उपलब्धियाँ / योगदान :-

- समकालीन परिस्थितियों में एक अखिल भारतीय संस्था का स्थापित होना और निरंतरता में संस्था के द्वारा कार्य करना अपने आप में एक बड़ी उपलब्धी थी क्योंकि भारत में विभाजन की एक अंतहीन श्रृंखला थी।

- संख्या के साथ-साथ अखिल भारतीय स्तर पर एक नेतृत्व का उदय एवं स्वीकार्यता भी एक महत्वपूर्ण उपलब्धी थी।
- राष्ट्रीय नेतृत्व के द्वारा उन मुद्दो की पहचान की गई जिसकी प्रकृति अखिल भारतीय थी। जैसे- भू-राजस्व में कटौती, नमक कर में कटौती इत्यादि। इन्ही मुद्दो को आधार बनाकर आगे भी राष्ट्रीय आन्दोलन का संचालन किया गया।
- नरम दलीय नेतृत्व के द्वारा विस्तार पूर्वक धन के दोहन का विश्लेषण किया गया, अंग्रेजों के शोषणकारी चरित्र को उजागर करने में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी। राष्ट्रीय आन्दोलन की प्रत्येक धाराओं ने इसी विश्लेषण को आधार बना कर अंग्रेजों के विरूद्ध आन्दोलन का संचालन किया। यह विश्लेषण नरमदलीय नेताओं का एक महत्वपूर्ण योगदान माना जाता है।
- नरमदलीय नेतृत्व ने लोकतांत्रिक तरीके से सरकार के समक्ष अधिकारों को उठाया। कुछ संशोधनों के साथ लोकतांत्रिक शैली का आगे भी महत्व बना रहा।
- इन नेताओं ने इस तथ्य को सरकार के समक्ष संगठित तरीके से रखा कि भारत का शासन भारतीयों के हक में किया जाए और लोगों को भी जागरूक किया कि शासन भारतीयों के साथ

न्याय नही कर रहा है।

- भारतीयों के अधिकारों को लेकर ब्रिटेन में भी संगठित तरीके से आवाज उठायी जाने लगी यहाँ तक कि ब्रिटिश संसद मे भी।

- संघर्ष की यह परम्परा परिवर्तित रूप में आगे भी जारी रही।

- कांग्रेसी नेताओं द्वारा निरंतर संवैधानिक सुधारों की माँग की गई और इसी क्रम में 1892 का अधिनियम भी पारित हुआ हालांकि इस अधिनियम के द्वारा कोई संतोषजनक सुधार नहीं किया गया।

नरमदलीय चरण की आलोचना :-

- सरकार से कोई महत्वपूर्ण रियायत प्राप्त नहीं करपाए दूसरे शब्दों में सरकार ने इनकी माँगों को महत्व नही दिया।

- अधिकांशत! नरमदलीय नेतृत्व ब्रिटिश सरकार में आस्था रखते थे और उनसे अपेक्षा करते थे कि वे भारत का आधुनिकीकरण करेंगे।

- इस चरण में कांग्रेस युवावर्ग एवं आम लोगों को अपने साथ जोड़ने मे सफल नही रही। कांग्रेस की सक्रियता मुख्यत: शहरों में दिखी।

• अधिकांशतः नरमदलीय नेताओं ने राष्ट्रीय राजनीति को अंशकालिक कार्य के रूप में देखा।

कांग्रेस की स्थापना से संबंधित विवाद

दो प्रकार के मत —
- (1) सरकारी षड्यंत्र सिद्धांत
- भारतीयों की जागरूकता का परिणाम

*सरकारी षड्यंत्र सिद्धांत :-

क्या है- भारतीय में संचित असंतोष को निकालने के लिए सरकार ने जानबूझ का कांग्रेस की स्थापना के लिए ह्यूम को आगे किया। इसे ही सुरक्षा वालव सिद्धांत भी कहते है।

समर्थन में तर्क / ऐसा क्यों कहा गया :-

• ए.ओ. ह्यूम की जीवनी वेडरबन के द्वारा लिखी गई जिसमें इस प्रकार का विचार अभिव्यक्त किया गया है।

इसके अतिरिक्त प्रथम अध्यक्ष W.C बनर्जी ने भी कुछ एक अवसरों पर इस प्रकार की बात कही जैसे - कांग्रेस वायसराय डफरिन की देन है
[डफरिन का कार्यकाल (1884-1888)]

- यह प्रश्न क्यो चर्चा में आया

• कांग्रेस या नरमदलीय कांग्रेस की आलोचना करने के लिए राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान लाजपत राय, आर.पी दत्त (मार्क्सवादी, इण्डिया टुडे के लेखक) एवं गोलवलकर (RSS) इस सिद्धांत का उपयोग किया।

खंडन :-

आधुनिक शोध के आधार पर इस सिद्धांत को विशेष महत्व नहीं दिया जाता है इसका खंडन कई आधारो पर किया जाता है जैसे ह्यूम की जीवनी में यह कही भी उल्लेख नहीं है कि सरकार के कहने पर कांग्रेस की स्थापना की गई बल्कि यह उल्लेख है कि साधु-महात्माओं के कहने पर ह्यूम ने कांग्रेस की स्थापना की।

• डफरिन ने ह्यूम को सलाह दी थी कि कांग्रेस को सामाजिक मुद्दों पर केन्द्रित रखे लेकिन कांग्रेस ने पहली बैठक में ही राजनीतिक - आर्थिक मुद्दों पर प्रस्ताव पारित किया न कि सामाजिक मुद्दो पर

• यहाँ तक की डफरिन ने भी तीसरी बैठक से कांग्रेस की आलोचना आरम्भ की।